जैनाचार्य श्री आर्जवसागर जी महाराज का व्यक्तित्व कृतित्व

अध्यात्म योगी, संयम -साधना के प्रतीक कठोर साधक, अनेक चैतन्य मूर्तियों को प्रकट करने वाले, अनेक युवाओं के शिरोधार्य, समाज प्रचारक, तीर्थोधारक, राष्ट्रहित प्रचारक, बहुभाषी, महान विद्वान, डॉक्टर, दिगम्बर संत आचार्य श्री 108 आर्जवसागर जी महामुनिराज जिन्होनें हिन्दी ही नहीं तमिल, कन्नड़, मराठी, अंग्रेजी , संस्कृत, प्राकृत आदि अनेक भाषाओं में अपनी साहित्यिक रचना में समाज को दिशा निर्देश दिये हैं। दिशा निर्देश देकर समाज में फैली हुई कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया है।

वर्तमान में प्रसिद्धि प्राप्त आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज से दीक्षित एवं अपनी त्याग, तपस्या, और साधना के बल से आप बहुचर्चित हैं। आपको व्यक्तित्व कृतित्व पर आपको राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पुरूस्कार एवं भारतीय रत्न पुरूस्कार से भी अलंकृत किया गया है | जिनकी ओजस्वी वाणी से हम नित प्रतिदिन अपने जीवन में सुधार की दृष्टि को अवलोकित करते हैं।

गुरुदेव अभी तक चौदह प्रदेशों में सन् 1984 से वर्तमान तक प्रतिवर्ष 500 से 1500 कि.मी. तक पद विहार करते हुए लगभग 15000 से 20000 कि.मी. नंगे पैर पद विहार की यात्रा कर चुके हैं। वे अपनी सरल, सहज, सुबोधितमयी वाणी से और वाणी मात्र ही नहीं शिक्षा, संस्कार, और अहिंसा के विभिन्न विषयों पर समाज को समय-समय पर सचेत करते रहते हैं। आचार्य आर्जवसागर जी महाराज को हाल ही में अत्यंत गौरवपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं। उन्हें उनके आध्यात्मिक साहित्यिक योगदान, समाजसेवा, और अहिंसा के प्रचार-प्रसार के लिए USA, UN, ASIAN,LONDON बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सम्मान प्रदान किया गया है। यह सम्मान न केवल जैन समाज के लिए, बल्कि समस्त भारतवर्ष के लिए गर्व का विषय है।

गुरुदेव का वात्सल्य तो अमूल्य है ही; उनकी विद्वत्ता भी देखने योग्य है। इस रूप में गुरुदेव नें अभी तक करीब 25 पुस्तकों के द्वारा शताधिक साहित्यिक रचनाओं को कर जन-जन को प्रभावित किया है गुरुदेव के साहित्य पर विभिन्न विषयों के माध्यम से अनेक विश्वविद्यालयों में शोधार्थी PHD कर चुके हैं और कर रहे हैं। सभी शोधार्थियों को गुरुदेव का मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहता है। गुरुदेव द्वारा रचित कई कृतियों का प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ दिल्ली से भी हो चुका है।

वर्तमान में गुरुदेव का आयुर्वेद की प्रणाली को प्रचारक के रूप में बहुत बड़ा योगदान है | गुरुदेव योग को भी अपना जीवन मानते हैं। ॐ योग ध्यान एवं सम्यक् ध्यान के द्वारा आप जन जन को ध्यान एवं योग की प्रेरणा देते हैं।आपके सान्निध्य में अनेकों बार डॉक्टर्स सम्मलेन; जिनमें एलोपैथी एवं आयुर्वेदिक दवाओं पर विचार विमर्श हुआ है |एवं अनेकों अखिल भारतीय राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठियाँ संपन्न हुई हैं। आपके द्वारा रचित संपूर्ण साहित्य पर भी कई बार संगोष्ठीयां संपन्न हुई हैं।

अभी तक गुरुदेव के माध्यम से अनेकों विद्यालय, महाविद्यालय, शैक्षणिक संस्थान, NGO आदि में और जेल , आश्रम आदि में गुरुदेव के व्याख्यानों का लाभ अनेक विद्यार्थियों सहित जन-जन को प्राप्त हुआ है।

गुरुदेव के अभी तक हुए 42 चातुर्मास से जैन समाज के धर्मावलम्बी ही नहीं अपितु नेतागण और अन्य जैनेत्तर लोग भी गुरुदेव के प्रवचनों के अंश को ग्रहण कर वर्तमान युग में अपने सामाजिक मंच पर अपने प्रचार प्रसार में संलग्न हैं। गुरुदेव के माध्यम से प्रतिवर्ष संगोष्ठी एवं पाठशाला सम्मेलन भी आयोजित कराये जाते हैं। जिनके माध्यम से विद्यार्थियों के साथ साथ विद्वानों को गुरुदेव का मार्गदर्शन निरंतर प्राप्त होता रहता है। आचार्य श्री का जीवन साधना के साथ साथ सेवा,करुणा और समाज के उत्थान का प्रतीक है|आपका जीवन अत्यंत प्रशंशनीय भी है जो सदैव समाज के हित के लिए तत्पर है | आचार्य श्री का जीवन साधना के साथ साथ सेवा,करुणा और समाज के उत्थान का प्रतीक है|आपका जीवन अत्यंत प्रशंशनीय भी है जो सदैव समाज के हित के लिए तत्पर है

आपको बताते हुए हर्ष हो रहा है कि गुरुदेव रचित बहुचर्चित कृति "तीर्थोदय काव्य" का विमोचन सन् 2004 में तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय बाबूलाल जी गौर द्वारा मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में तथा "प्रभावना" कृति का विमोचन सन् 2024 में भारत के कृषि और किसान कल्याण मंत्री माननीय शिवराज सिंह चौहान जी द्वारा विदिशा में किया गया है; जो की एक गौरव की बात है। आचार्य भगवन् के आशीर्वाद से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका भाव विज्ञान का विमोचन इंदौर महानगर में सन् 2025 मध्यप्रदेश जल संसाधन मंत्री तुलसीराम जी सिलावट के द्वारा किया गया। एवं सन् 2025 में ही इंदौर में आचार्य श्री की अद्वितीय कृति आध्यात्मिक प्रवचन एवं सदाचार सूक्ति काव्य का विमोचन कर्नाटक के राज्यपाल महामहिम थावरचंद गहलोत जी के द्वारा किया गया |

इस सराहनीय कार्य हेतु संपूर्ण भारत राष्ट्र समाज आचार्य भगवंत श्री आर्जवसागर जी महाराज का आभार व्यक्त कर उनके चरणों में बारम्बार नमोस्तु अर्पित करती है | और भावना भाती है कि पूज्य श्री का स्वास्थ्य,दीर्घायुष्क और तप प्रभाव यूँ ही समाज का मार्ग अवलोकित करता रहे |

धन्यवाद

प्रेषक

आर्जव प्रभावना संघ भारत